

१४६ ललितोत्तरा

पुस्तकालय

ASHA ARCHIVES 3526

दाय

[illegible]

नकावकायसायविधिः दत्तयाकायसायसकलरुसिमालावैद्यकृष्ण
उक्तिर्नरुसिमालाथसिमादिकनम्बुयाधूचकसियोयविमानरुना ॥
थतकायसायकम ॥ वैद्यनिसधकायसायसाय ॥ प्रतिपलडाकायलज्जु
वादि ॥ उं हं यद्वासाय २ ॥ वाहा २ अकृतय ॥ कायसायमरु ॥ नैवां वक्रा
अनितांगसेनवायगीपा ३ ॥ उं हं हं उकसेनवाय २ ॥ ॥ अनादि ॥ ॥
उं हा हा हा ल अकृत ॥ म्मा मा हं यये नू नू सेनवायगीपा ३ ॥ उं हं निपूना
नकसेनवाय २ ॥ ॥ ॥ दक्षिण ॥ लडा हा पल सिजल अकृत वादि ॥ येषा
नत ॥ नैवां कां को माये वन्दे नवायगीपा ३ ॥ उं हं अग्निवतालसेनवाय ॥

नेमः सप्त ॥ लूङा हाय ल वाहि पूष्या कृत ॥ ॐ नमो वैष्णवे काध न सन्व न हे
 न वाय ग्रीया ॥ ॐ हं सु निजि क हे न वाय न मध ॥ ॥ पश्चिम ॥ लूङा हा
 या हि पूष्या कृत ॥ ॐ नमो वा ना द्ये उ मरु हे न वाय ग्रीया ॥ ॐ हं काल क हे न वा
 य ॥ ॥ वाय ॥ ॥ लूङा हाय ल वाहि पूष्या कृत ॥ ॐ नमो ॐ द्यो य ॥
 कया ला हे न वाय ग्रीया ॥ ॐ हं कया ला म हे न वाय न मध ॥ ॥ ॐ उरु र स ॥ ॐ
 लूङा हाय ल वाहि पूष्या कृत ॥ ॐ नमो वा मू ला ये ती षण हे न वाय ग्रीया ॥ ॐ
 हं कया द हे न वाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ लूङा हाय ल वाहि पूष्या कृत ॥ ॐ नमो
 नमो महा ल वे स हा न हे न वाय ग्रीया ॥ ॐ हं ती म नू प महा हे न वाय ॥ ॥

[illegible][illegible]

लकाथानसकाय ॥ नवद्वीपपूर्व निस्थानदिगकापवर्तिन ॥ अथमनसुय
सोही ॥ ॥ ~~निशानावायविधिः~~ ॥ ॥ ~~अथअथविधान~~ ॥ अथमनसुय
तयतनानाटवप्रयुजने ॥ वाक् ॥ यजमानस्यामकनृणावीरुनसमधुपुवर्गार्थ ॥ विनाधपय्याव
नमासिमापादुधुप्रवर्गनरुनसासकानकृटनमिजनपादुधुप्रवर्गनरुनसासकानकृटनय
जा ॥ क्रमर्थनाटवप्रयुजधनक ॥ पुरुतय्येनशुभयर्थ ॥ अथपाखनभापनिसक
सुंदवयादुवनतयावकेनाकथन ॥ सुनिप्रवर्गक्रमनमिजनपादुधुप्रवर्गनरुनसा
धपाखलेश्वनहायावलाधन ॥ अथदृष्टेयुवसयावलाधयामिस्तिनासवर्गनरुनसा
थगारुयाजुमकपादुसरेसुसिद्धि ॥ ३ ॥ अथप्रकाशनसकल्येनधनय
॥ निशानावायानसकानकृटन ॥ अथपावमुपावसिद्धि ॥ ३ ॥ अथअथपदति

आवाकनकाय ॥ दवालीवादिआत्मानावादिन्यासविसर्जन ॥ ४ ॥ अथनलिआखा
नवयावसलार्थअसुखंरपूजा ॥ पूजासनमधुलचन्दनादिपूष्यधुयदीर्घदत्तासु
समकुल ॥ तालेखिवरुलिखदावपूजा ॥ सुलिकसखदाव ॥ लोहातसलेश्वनहास्य
अंतनेतनसुलिकथायावसुलियुजनमकुलसंप्रय ॥ तालदकाविसर्जनया
दावक्रमनहाय ॥ पाखनभाधनकायकेसुलमुवलासतालवकाविसर्जनय
अवक्रमनहाय ॥ अथअवकादवहास्य ॥ ५ ॥ अथनलिआकायसमयचिपन
थिचक ॥ सुयसाक्षि ॥ ॥ निट्यालरुनयाविधिः ॥ ॥ अथविवर्जनविधि
विधिः ॥ नकयनाटवप्रयुजने ॥ यजमानस्यामकनृणकथाप्रवर्गार्थ ॥ विधि
अथअथप्रयुनकाव ॥ अथपाथ ॥ आखात्रवय ॥ तालादिदुधुप्रयुज ॥ पूर्व

कमनसकल्यस्वभावविवर्तनविषय ॥ तान्निविमसरुडिक्कायरासासरुडिक्काय
दक्षिणदिग्बिबर्तनविषय ॥ विषयमालकोथथयवधकंधाय ॥ आरुसमयक
य ०० ति विवर्तनविधिः ॥ ॥ अथपाठार्ककाजलपंवायविधिः ॥ श्रीनाट्यन
पूजने ॥ अथादिपञ्चमानस्यामृकनृत्यकथं प्रवेगार्थं गीतलहनाथरुद्रानकनिमित्तार्थ
वाक्य ॥ देवयाजवसुखदावेगमकैगपूजामन्त्र ॥ ॐ कं कं कालमूर्तं यतिनं जनपदा
यनमः ॥ ॐ दुर्बलि ॥ जयशङ्खपशुतर्पण ॥ धनं लिदवस्याग्रेष्यास्वनमानस्वदा
वैश्वदेवास्ते स्वतदाय ॥ पाश्यामूनूतयनदुथूकटनमधनयाय ॥ धवधव
मनन ॥ यथ ॥ ॐ नमो हरे श्रीनृपनाथमहादेववसुधायुधाय ॥ वन
वशस्वाहा ॥ रुद्रपाशध्याय ॥ ॐ नमो हरे श्रीनृपनाथमहादेववसुधायुधाय ॥ आनन्द

[illegible]

स्वस्तिकं स्यात्स्व नमो लोकोत्तमं कस्तुतु जादावनाति लिङ्गकपदय
नागकास्यं स्थितं नमो निगमकं न चितं ॥ मालकोदं नमो लोकोत्तमं कस्तु
साक्षात् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
काकायावत् ॥ नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
वि० ॥ ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
निमालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
चान्तो लिङ्गोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु

सनवायावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
ज्जमकस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
विद्याजवत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
दियजमानस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
निमिमित्यर्थं वा ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
ज्जमकस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
ॐ देवलि ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
वक्तुं लोकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु
लोकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु मालकोत्तमं यथावत् ॥ यथैकं नमो कस्तु

न ता ल व ना दि र्वि उ मा ग म य तौ स्वनं ध या ह व म स्त सिक स सु जा दि ॥ प्यार व न
 मा प नि स्त न द व र्म म ख या दं ॥ ॐ हूं हूं ॐ ति म नु न ॥ **ज व र्वि म ज द क न स प**
॥ न व र्वि म ॥ ह व र्वि म ॥ ॐ हूं हूं सर्व वि धि नि वा न ल य व लि ॥ २ स ह
॥ क ल र्वि पिस्य व लि स त ॥ ॥ ध न म र्वि म क न ॥ म ल स र्वि म ज य व प ॥ ॐ हूं हूं
र म ह न र्वि म य स र्वि म न द ग कि स हि ता य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं म र्वि म स प
ॐ न ॥ मि ला पा र्वा ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म

न दि न म र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ **ज व र्वि म ज द क न स प**
॥ न व र्वि म ॥ ह व र्वि म ॥ ॐ हूं हूं सर्व वि धि नि वा न ल य व लि ॥ २ स ह
॥ क ल र्वि पिस्य व लि स त ॥ ॥ ध न म र्वि म क न ॥ म ल स र्वि म ज य व प ॥ ॐ हूं हूं
र म ह न र्वि म य स र्वि म न द ग कि स हि ता य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं म र्वि म स प
ॐ न ॥ मि ला पा र्वा ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म
॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म न द ग कि र ह व क य म ह न र्वि म य न म ॥ ॥ ॐ हूं हूं स र्वि म

हृत्तिकस्यैव वक्राय ॥ **सुखादिव्याखनम** ॥ **द्याघनाह्वय** ॥ **मूलमल** ॥ **न** ॥ **द्याघ** ॥ **न** ॥
नचिचके ॥ चन्दनादिजुहिषकाजीहोदवियमकलसू ॥ गगकृकाय ॥ न्या
तामुं ॥ वलि विसर्जने ॥ समयवियचंयनधियके ॥ ज्ञाघात्रवदावमल
लेवायपूतासन ॥ कवाय ॥ सलापेना ॥ ध्वनपूजा ॥ अखरव ॥ त ॥ पमुति
धनकावतातकस्यैव वक्राय ॥ पुर्वेगइकसकलप्याखनद्रयके ॥ अ
कृसकाय ॥ न्याससूर्यसात्रि ॥ सलुनकास्यैव घघनागाय ॥ **ॐ तिद्याघ** ॥
सिद्धि ॥ ॥ **जुधकनू** ॥ **लिद्धि ॥** ॥ नसनीकगुलिचाअदित्यवार्धेइ ॥ रहस्यति
वानं ॥ भवसूदिनसूतनैगुलाल ॥ कनूकाय ॥ कनूपाण्डु ॥ अवखवगायन
नालध ॥ त्रजवखिसूजा ॥ कनूपाण्डु ॥ वयक ॥ म ॥ उ ॥ नू ॥ ह ॥ ति ॥ न ॥ ल ॥ सि ॥ पा ॥ का ॥ व ॥

षष्ठि मालकय ॥ सुविबभुनतियउपवासायार्कतनावाचानलिनसवानकाध
नक ॥ ना ॥ ध्वनस्कपूजाह्वय ॥ कनूकाय ॥ न ॥ स ॥ प ॥ म ॥ ॥ चालेस ॥ रव ॥ ठि ॥ क ॥ ल
॥ हा ॥ प ॥ म ॥ प ॥ च ॥ न ॥ ल ॥ डा ॥ हा ॥ क ॥ क ॥ ट ॥ दा ॥ हा ॥ न ॥ स ॥ न ॥ हा ॥ ज ॥ ॥ म ॥ न ॥ त ॥ स ॥ लिन ॥ ध ॥ प
वास ॥ क्ष ॥ ति ॥ क्ष ॥ ति ॥ ॥ क ॥ न ॥ व ॥ पा ॥ ण ॥ द ॥ य ॥ हा ॥ स ॥ म ॥ ॥ दा ॥ रु ॥ ले ॥ २ ॥ ॥ म ॥ न ॥ त ॥ र ॥ व ॥ ठि ॥ क ॥
उ ॥ उ ॥ लि ॥ ध ॥ वा ॥ ॥ ॥ ग ॥ छि ॥ म ॥ ल ॥ प्या ॥ ख ॥ न ॥ क ॥ पि ॥ त ॥ म ॥ य ॥ प ॥ वा ॥ न ॥ पू ॥ जा ॥ जा ॥ न ॥ व ॥ द ॥ य
क ॥ ॥ ना ॥ ध ॥ ध ॥ व ॥ पू ॥ जा ॥ प ॥ वा ॥ म ॥ ता ॥ लि ॥ ता ॥ न ॥ ॥ ध ॥ त्रि ॥ व ॥ जि ॥ ग ॥ जि ॥ न ॥ क ॥ म ॥ र ॥ वा ॥ य ॥ ॥ ल ॥ डा ॥ हा
प ॥ म ॥ प ॥ य ॥ न ॥ ल ॥ वा ॥ स ॥ स ॥ द ॥ व ॥ स्म ॥ ग ॥ क ॥ ध ॥ न ॥ ॥ च ॥ न ॥ दि ॥ द ॥ वि ॥ पू ॥ य ॥ स ॥ वा ॥ प ॥ हा ॥ न ॥ ल
स ॥ पू ॥ ष ॥ ॥ ना ॥ ल ॥ वि ॥ व ॥ ह ॥ लि ॥ क ॥ ल ॥ हा ॥ स ॥ वा ॥ य ॥ ॥ न ॥ व ॥ न ॥ व ॥ लि ॥ ॥ मे ॥ उ ॥ जा ॥ वा ॥ या ॥ व ॥ क ॥ न ॥

वपाननपूजासंति विस्मृतं गायत्र्यादियजमानस्यामक नृत्त्य कनू लसिद्धि काम
नार्थं नृत्त्यं नृत्तिवर्ग किं रुद्रा न काय क्का गवलि स हित पंथा यत्रा न पूजानि
निमित्तं यथैकं उग्रो हृद्गो न वं अर्थं नमः ॥ सी (म पौ) (म न द वा च्च न) ॥ न व न स
मकुल पूजा ॥ वि पू न म कु ल पूजा ॥ धूप दीप पूजा यस्तु ॥ ॥ धन क नू ल पा नु द्रं ॥ द व स
मूर्ख न स्वस्ति स्वनं ॥ ॥ अथ (मा ध न) ॥ उं ४ अ सु य रु ॥ अ र्ध पा नु ल व न रु
य ॥ उं ४ क ४ अ सु य रु ॥ मा उ नं ॥ उं ४ कं नि स्वा ये वो य द नि त्री क लं ॥ ध न स
जा ॥ अ उं ग व पूजा ॥ उं ४ कौ कौ ह द या य नं ॥ ४ ० ॥ द्या दि ॥ ति ॥ रु रे स रे नृत्त्यं न
प्र न नो रु व द्या पा पूजा ॥ वा न ३ ॥ त मा ध्या नं ॥ (म को त्मा क नू ल व स रु नृत्त्यं न
मा रु स पा द को ॥ नि नो ता नि रु (म व वा न न ग गो नि व द को वा रु व ॥ पू न रु रु

नितमिनी किति रु व त्त्वा या दि ता य ४ पू न ४ दी ना ला क न वा द ना ग्र व द न न मा
नि व द को नृत्त्यं ॥ मा रु त्म क ४ ॥ यं वा धि कं हि न ति व र्ध स र्वा ४ व यः कृ पा गो ग
नृत्ति वि नृत्त्यं ॥ गृ दान या यं य म दे व त य न स ४ प सिद्ध ४ क नू ल क वी लु ४ ॥ ध्या
न पू र्वा न म ४ ॥ द व स्तु न न ॥ पू न न पि य य ध्या नं क त्वा ॥ क नू ल पा नु ल नि व सि नि क
य ॥ (गो लु लि ॥ उं ४ कौ कौ क नू ल म रु य नृत्त्यं न म रु ह न व अ व न न रु न
स्ति न्या न स नि वि धि ॥ क नू ल स नृत्त्यं न व क नू ल म कि स हि ता य कौ कौ
यं ३ ४ २ कौ सा हा ३ ॥ द व स्तु न न ॥ पू न न पि त नृत्त्यं क नू ल पा नु ल मि वृ ॥ वृ
न पि नि क य न यं ॥ उं ३ ४ ४ कौ कौ कौ नृत्त्यं न व कौ कौ वा य कौ ३ ४ २ उं ३ ॥ द व

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ मन्त्रः सायान्मार्गं पथः ॥ वाकनस्य गुणविशेषः ॥
 तालधनादिस्वस्वमनुष्यजनैः ॥ स्वस्तिकसंवायावचिन्दनसिद्धनसुगुणमीर्षादिविय
 ॥ तालस्वस्वमनुष्यजनैः ॥ कापालसंघालविस्मृतया दारुणस्वान्तजुक्तकायावजापमनु
 ॥ त्रिजलरुद्रं कुरुवृषभं नृसिंहं नृशङ्खं ॥ अङ्गुली ॥ ३ ॥ अङ्गुली ॥ अङ्गुली ॥
 थकवृषभं मृत्तिकां कुरु ॥ त्वत्पुसादनसकली ॥ मोक्षयत्यनमं नृप ॥ अथ नयनोत्तमं ॥
 नकवृषभं पाणविय ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥
 मन्त्रं ॥ रुद्रविद्योतयनिर्झरविद्य ॥ पाणविय ॥ नकमन्त्रं ॥ निन्दासाधनविस्मृतं
 पञ्चमूलासमर्पणं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ कुरुवृषभं पाणवृषभं कुरुवृषभं ॥
 अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥
 अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥ अथ नयनोत्तमं ॥

नकंठयास्तानवनापकास्यैजापयकं कुचकं वाकानलपातुयाडधंजयपावनाप
कास्यैकुचकं ॥ धननवकतालकस्यैदेवकाय ॥ कात्रवपातुकावयादं हकवि
यकं कनूवनागकायकं ॥ विद्यापथस्यै ॥ रासवात्रगनंमनं व ॥ यासासुधमलुल
वलिबिस्तर्जनं ॥ आकृसमयवयनधियकं ॥ थथपाखनयनिंकहानावसत
विस्यपूजायाद ॥ पूषाकृगजवनय ॥ १०८ ॥ नानमवास्यैसुनूमधिस्यैवयावकनूव
पातुस्यैकुचकं ॥ कात्रवपातुवयामनुवजयत्रपावकुचकं ॥ हकवि यउ ॥
दवदक्षिणायुनूदक्षिणयधगकि ॥ नूतिकनूवविधि ॥ ॥ श्री ३८८५नाथाम ॥

श्रीनृसुनाथायनमः ॥ अथमूलसिद्धिः ॥ मूलसिद्धियाद्यैककृपाखनसंगलका
सकलैर्लुसिपायस्वडिस्तानुविबभुनति यउववासमाय ॥ निरुसवानिधूनकं ॥
वलकिशालदावकृतिरमतकउलजा ॥ दयकं पूजातं ॥ विवेवापवात्रदयकं वन ॥ स
लायैनिरुसवानिधूनकाय ॥ अकृसकाय ॥ कृतिरमतयात ॥ कृयकदवसुजागत्रयाद
वानं नयमनवनि ॥ वावानलिहानदावसकलसंस्तानादिथव ॥ निरुसनिधूनकं ॥
दनमनं वा ॥ थव ॥ कृतिरपूजातुनिग्रवनादिसंसादयकं तं ॥ ॥ थना ॥
नपूजा ॥ जलपंचामृतादिस्तान ॥ धत्रिवजिनकीवल्लवाय ॥ चदनसिद्धनूदवि
ज्जमकास्तानकायपूतासनवायतायहा ॥ वलिभुजावनादि ॥ विवलि ॥
चवल्लिमालकावाय ॥ तालुविबभुलिकधनवाय ॥ पूतासनवाय ॥ चदनादि ॥

[illegible][illegible]

रुद्रस्वाहा मयूना सनाय पापू ॥ वौवद कनाथ यवलि गुरु सव विद्या नागय २ नृगसि
द्विक नृरुद्रस्वाहा मयूना सनाय पापू ॥ गंग गंग यत य वि लि गुरु सव विद्या नाग
य २ नृय सिद्धि कुरु रुरुद्रस्वाहा ॥ ५७ गंग नी गंग मूडा ॥ ७० ति वलि ॥ ॥ पुंज पमास
नाय पापू ॥ पुंज ग वी से नाय पापू ॥ पुंज लि ॥ पुंज ह रे अन न्य ग कि रे व वान न्य वी
नायिय त य स रे म हा विद्या वा ऊ ग्य वी पापू ॥ ३ ॥ वलि ॥ अद्या न व नानि ॥ सि गूल
धानि मूडा ॥ वि नृ य ॥ ॥ अथ नृय य वा ॥ पुंज नृयान म ॥ वाम मरु का ॥
गंग गंग यत य न म ॥ द न ॥ ॐ हं ह रे म हा नृय य व न र वी य स रे अन न्य ग्य वी न कि
स हि ता य न म ॥ म ॥ ॐ ति न म स्तु ॥ ॥ अस्तु म नृ य त उ य दि ग्व न्य न कृ त्वा ॥
पा न या म कृ त्वा ॥ ह रे स रे अन न न व प्र ण याम ॥ ॥ न्या स ॥ ॐ हं हं अं य ॥

ह्यो नमः पाद को पूजा ॥ ७० ह्या दि क नृ न्या स ॥ ॐ हं हं हं द या य न म ॥ ७० ति य ॥ १४
त ता व कृ न्या स ॥ ॐ हं हं हं उ व का य न म ॥ ॐ हं हं हं उ व का य २ ॥ ॐ हं हं हं पृ ष
व का य २ ॥ ॐ हं हं हं द कि न व का य २ ॥ ॐ हं हं हं उ व व का य २ ॥ ॐ हं हं हं पृ षि म व का
य २ ॥ ॐ हं हं हं अ स्मा य रु ॥ ७० ति व कृ न्या स ॥ ॥ त ता स न नि क्षा य पृ ष २ ॥
ॐ हं हं अ क्ष ना य रु पृ षा स ने पापू ॥ १८ ॥ ॐ हं हं व द म पु ला य पापू ॥ ॐ हं हं सूर्य म
पु ला य पापू ॥ ॐ हं हं अग्नि म पु ला य पापू ॥ ॐ हं हं म म पु ला य पापू ॥ ॐ हं हं न कि म पु
ला य ॥ ॐ हं हं पु ना स ना य पापू ॥ ११ ॥ ॐ हं हं व व हा स ना य पापू ॥ ॐ हं हं नृ य य ना स
ना य पापू ॥ ॥ त ता आ न ॥ ॐ हं हं व क व कृ ति न य नी ना ग कृ त्वा ल म ति नं ॥ ॐ
हं हं हं हं ॥ ॥ त व पु स्तु ॥ ॥ हा लाल का व ह मां गी ना ग य रु प वी ति नं ॥

व्याघ्रचर्मपविर्धनं सिंहचर्मालिखयत् ॥ धातुगुणकनाकाक्षं तापुर्वपत्रम
 च ॥ उड्डवाह नृपुत्रं उमत्रं गूलमवच ॥ विदुलीनवच कंचकलिकाच नृमालिका ॥ गंध
 वामं नृपुत्रं स्वर्णं पद्ममवच ॥ नागंधनूस्तथा घण्टं कपालं चकमधुर्नृ ॥ सरुग्रह
 यंसं कालं कलाहित्रं च वृक्षं ॥ वृषा नृपुत्रं समाकृत्य नृपुत्रं गाननसंयुतं ॥ वाद्यमा
 नं नदिकं नृ ॥ महाकालं च वामकं ॥ वीधवं किन्नरं गले ॥ देवास्त्रममनो नमः ॥ गाय
 मानं मृदायुक्तं वाद्यमानं लयांगकं ॥ आनन्दगकिं सयुक्तं सुयुक्तं गवधमवितं ॥
 जेवरं नृपुत्रं च सर्वो लोका नृपुत्रं ॥ नृपुत्रं मानं महादेवं सर्वदेवगणेशं
 नृ ॥ ५७ वं श्रीमहादेवं नाटकाय स सिद्धय ॥ मानवानां हिताथय सर्वद्वि
 तनामने ॥ श्रीनृपुत्रं नमः ॥ यायूग ॥ श्रीवाहनदि स्थापन संनिधान संनिवा

धनं श्रीवयुधं नृकवचो कनकमूला ॥ नृपुत्रं विधुल उमत्रं जायमाना धनम
 यदि नृपुत्रं ॥ श्रीनृपुत्रं ॥ श्रीवमनीयं ॥ चन्द्रनं सिद्धराकोपुष्यं समर्थयो
 सिनमः ॥ श्रीजुलि ॥ ॐ हूं हूं रे महा नृपुत्रं यन नृवाय सरे नृपुत्रं लक्ष्मीसकिस
 हिताय श्रीजुलि पृष्य पाइकी पूजा ॥ ३ ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ हूं हूं हूं दयाय नमः ॥
 यायूग ॥ ॐ हूं हूं हूं वलि ॥ ॥ पंचवक्त्रपूजनं ॥ ॐ हूं हूं हूं सदा जाता यनमः ॥
 ॐ हूं हूं वामदेवाय नमः ॥ ॐ हूं हूं यन नृपुत्रं यायनमः ॥ ॐ हूं हूं हूं अधावाय नमः ॥
 ॐ हूं हूं हूं नाना यनमः ॥ ॐ ति वक्त्रपूजा ॥ ॥ ॐ हूं हूं हूं किनी यागिनी रुद्र
 करं ववाय नमः ॥ यायूग ॥ ॐ हूं हूं हूं किनी यागिनी विप्रा नृक रे ववाय नमः

या पूज ॥ ॐ हूं लो ला कि नी या नि ना अ नि व ता ल रे या पूज ॥ ॐ हूं को वा कि नी
या नि ना अ नि वि द रे ॥ ॐ हूं सां ता कि नी का ला न रे ॥ ॐ हूं हा कि नी या नि ना क ता ल रे
ॐ हूं यां या कि नी या नि ना अ क या द रे ॥ ॐ हूं सां ता वि नी या नि ना हा म व प रे व वा ये न म रे
पू र्वा दि न ना न रे ॥ ॥ त ता व द न म रे ॥ ॐ हूं अ यो दा य न म रे ॥ य ह वै द ॥ सा म वै द ॥
अथ व वै द ॥ पू र्वा दि उ ल ना न रे ॥ ॥ य म दि ॥ ॐ हूं कृ त य म य न म रे ॥ व ता द्रो प न ॥
क लि ॥ आ य या दि न ना न रे ॥ ॐ हूं को अ नि ना ग रे व वा य अ व क्ता न कि स हि ता
य न म रे ॥ ३ नू न रे क मा द न ॥ ३ व उ रे को मा नी र ॥ ३ क ष रे टं वे सु वी ॥ ३ उ न रे
रे तं वा ना हा ॥ ३ क बाल रे पं ड डी ॥ ३ हा व न रे सं वा म रे ॥ ॐ हूं को सै हा न रे
ने वा य मं म हा ल म्मा कि स हि ता य न म रे पा पू ज ॥ पू र्वा दि न ना न रे ॥ ॥ ॐ हूं ध र्मा य

न म रे पा पू ज ॥ क्ता ना य वे वा क्ता य ॥ नू न यो य ॥ अ ध र्मा य ॥ अ वे ना ग्म य ॥ अ ने य
यो य ॥ पू र्वा दि म ध य न रे ॥ ॥ ॐ हूं क्ता क य न म रे पा पू ज ॥ वि यो ग क य ॥
ज्ञ न रे क य ॥ ॥ ॐ हूं लं ड य न म रे पा पू ज ॥ नू न यो य ॥ नू य मा य ॥ नू न रे
न व ॥ वे व न य ॥ नू वा य व ॥ नू क व न य ॥ हूं न ना य ॥ नू अ ध य ॥ हूं ड डी य न
म रे पा पू ज ॥ पू र्वा दि न ना न रे ॥ ॥ ॐ हूं अ वि ना दि अ वि वि ग नि न क्ता न म रे ॥
॥ ॐ हूं पु ति य दा दि ॥ ॐ हूं या म दि ॥ ॥ न व न पू रे क ल हा य क वा या व न व न र म
हि न रे व न य ॥ ॐ हूं नं ग न नू प म हा रे न वा य अ ध र्मा य कि स हि ता य अ व न
न र स्वा हा ॥ न व न व लि स ॥ ॐ हूं अं ३ वि षु व सि दि पु द य न म रे ॥ व सि ॥ नू न य ॥
॥ १ ॥ ॐ हूं नं वी न नू प म हा रे न वा य ध र्मा य कि स हि ता य अ व न न र स्वा हा ॥ व सि ॥

दक्षिणायामिन्द्रियददउ ॥ नृनिशान्नसनाथस्यार्चनं ॥ ॥ अथ नदीपूजा ॥ गार्हो
उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो आधनादि ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो आधनादि ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
शिवो जगन्नाथः सकलकामधनप्रदः ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
वृषा महात्माना नदीमद्वानपालकः ॥ ध्यानपूर्वकं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
नृकथं श्रीजलिपूर्वपाप ॥ वलि ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
नदीपूजा ॥ ॥ अथ दक्षिणायामं महाकालपूजा ॥ ॥ गार्हो ॥ नो हृदयाय नमः ॥
धनादि ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ ध्यानं ॥ कुरुवीरु विमलस्य ॥ पीतगन्धमहादनः ॥
कुरुवागिरिकल्पं मधुमालाहिलोचनं ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
गंगा महाकाला नृसमद्वानपालकः ॥ ध्यानपूर्वकं ॥ श्रीजलि ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥

रुथं श्रीजलिपूर्वपाप ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ वलि ॥ शिवो जगन्नाथः सकलकामधनप्रदः ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
अथ दक्षिणायामं महाकालपूजा ॥ ॥ गार्हो ॥ नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
य ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
दक्षिणायामं ॥ ॥ नदीमद्वानपालकः ॥ ध्यानपूर्वकं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
वां मयूरासनाय पाप ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
दि ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
दयादि ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
गवपतयं श्रीजलिपूर्वपाप ॥ गुरुं विदुः प्रथमं वायुमानाहृदं गुरुं ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥
दक्षिणायामं महाकालपूजा ॥ ॥ गार्हो ॥ नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥ ॥ उं नो हृदयाय नमः ॥

कामदंगदलितमिवजगत्ताम्यहप्रतर्हं ॥ ॥ ~~हनुमन्मया~~ कपिवक्त्रायवीन
 यः सनेवधेयुवधिनं ॥ लंका मथनगालायः हनुमन्नुदयतनमः ॥ अर्जुनकादिना
 लकोत्थिति ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ यमधनकात्रमेहिनी साधनं कौपीनं ॥
 मूथमाहनी साधनं वक्ष्ये ॥ छतिनथयस्यैपूजा ॥ यमधनकात्रमेहिनी साधनं कौपीनं ॥
 यकः स्वनमदयकैद्वनस्तासस्तिनर्वधेनावेपूनास नमः ॥ यकः स्वनमदयकैद्वनस्तासस्तिनर्वधेनावेपूनास नमः ॥
 वास्यैमैवीते ॥ यथा कृपातस वहुसमनलपयावे ॥ अयुलिक
 गुयाउमयाआम्राय ॥ ददवनायामेनुवायावसिधनजुका
 वाहललूजिकोपलूपाइकातस्य ॥ लाजुलना ॥ नयायामैवीते
 त ॥ छिवलि ॥ पंचवलि ॥ दण्डवलि ॥ अर्घ्यपात्रसहितनमः ॥ यथा
 छिलिखवसे ॥ रथापप ॥ यथिलीजवसमाहनी साधनयाययात नवथानिचकं ॥



वसे ॥ सिद्धनवजगत्तमलुलथलावधिननवयानीवक्रमलुलकायावतायहनावकाल
 दलुवातन ॥ यमलुलयापिवधिमसं ॥ यकाववास्य ॥ स्वात्रयाम ॥ वाय ॥ पात ३२ स्वा
 नवाभानकायकैवायावे ॥ दण्डलिवलिवायाव ॥ अर्घ्यपात्रथयामैविकनतयमाले ॥
 यथात्रवसे ॥ क्रमाच्चनयामसा ॥ माहनीयात ॥ कादृकापलनकपुपाकात ॥ वलिउका
 वनादिमालकावायाव ॥ चननादिपूज्यजगत्तमअहवानेद्विचक्रमाधेन ॥ ॥ अर्घ्यादि
 यजमानस्योमकनृत्तसिद्धिकोवनाधेसोता ॥ यमनीकजमाहनी साधनपूवकअमकद्वीहद
 त्रकायैचक्रयुजानितितथीग्राहकनवअर्घ्यनमः ॥ ॥ यथापूजाजनस्यकादुवसमेवपी ॥
 उरुनास्यार्घ्यकला ॥ उरुनमस्त्यात्रयासाधयामस्त्युगा ॥ ॥ यथापूजाजनस्यकादुवसमेवपी ॥
 नन ॥ उरुनीसोद्वानदवतायेनमः ॥ दानस ॥ उरुनीसोअर्घ्यपात्रसनायनमः ॥ अर्घ्यपात्रस
 उरुआवात्रगकिकमलासनायनमः ॥ स्वासनीय ॥ ॥ दमदिकालमाहकाहोनम

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

ASHA ARCHIVES

3526

ASHA ARCHIVES

3526

[illegible]

माहनीयाजवशवदकवर्लिं॥ जां ग्री वां वां वै नमः हिंदवीपुत्रवदकनाथकपिलजगता
प्रतापनचिनकोलासुखगन्धयुक्तानिचिनिगवर्लिं गुरुं रममसर्व
विद्यानागय रं रं रुद्रस्वाहा॥ ना नायमदा॥ ॥ लिवनं गवयति
वर्लिं॥ जां ग्री वां वां वै नमः हिंदवीपुत्रवदकनाथकपिलजगता
जां वर्लिं गुरुं रममसर्व विद्यानागय रं रं रुद्रस्वाहा॥ दक्षिणमदा॥
वामसंयमिनीवर्लिं॥ जां ग्री वां वां वै नमः हिंदवीपुत्रवदकनाथकपिलजगता
गगनगल्लगल्लनिसुखा पातालवाननवागलिलयवनया यं रुद्र
स्तितावानकेशपा॥ प पा प दि पू सु रु न म दा ४ पू य दू पा दि क न वा

कादयः सदानः गुरुवलि विविना वा नुवी नन्दवन्दाः स्वाहा ॥ वाया लम
दा ॥ ॥ अग्रसकं वलि ॥ जां श्री कौं कौं कौं स्वमकं याल धवादि वा लिलि
नवलिं गुरु रुरु स्वाहा ॥ दलु मूडा ॥ ॥ माहनी या अग्रसदा यकत
या या न २ वलि ॥ जां वपु या नि ना सा वलिं गुरु रुरु स्वाहा ॥ घळया ॥ महा
ना सा या ॥ इ मूखा या ॥ सु मूखा ॥ व वता ॥ धा ना ॥ सो म्या ॥ हो मा ॥ महा वना ॥ ज
या विजया ॥ अजिता ॥ अयना जिता ॥ महा लका ॥ विद्रु पाशी ॥ उक्ता ॥ अका
म मोहका ॥ जात हा ना ॥ सहा ना ॥ उक्ता ना ॥ अक्ष व वता ॥ विप्यली ॥ पूय
हाना ॥ अहनी ॥ नन्ध हा विनी ॥ रुड काली ॥ सुहदा ॥ ती मा ॥ की मूत

दि का या नि ये वलिं गुरु रुरु स्वाहा ॥ ०० हा लि न या नि ना वलि ॥ ॥ धन
माहनी समा लका नुरय नयुजा ॥ दलु लि वे लि विरिय ॥ नि माह व गड मा दवी लि हर्व मः
सदानि वः ॥ हयानु मे मरु सु मे यथा क्रम सु वा वि जा ॥ रु यलु रं व वा ॥ स व स ग म
सम रा वि या ॥ या नि न्यः ॥ कुरु या ला ध्र या व कुरु य व लि ना ॥ अरु म मा दि ॥ यज
माने स्या मु क नृ ल ना थ सिद्धि सकल लोक स माह नार्थ माहनी सा धन रि य व लु द
ना द य व ल वि वि ॥ ॥ तता वी न द य द य ॥ वां द द य यदि ना म्या स ॥ अ
सन ॥ आक्ष रा दि ॥ ॥ उं का रा स ना य पा य ॥ अं ज लि ॥ उं ग र कल कू मा य व
यु ॥ २ ॥ व लि ॥ अ धा व व ज व ना लि ॥ व लि ॥ वां द द या दि ना य ज न ॥ व ड य
अ दि ॥ उं का य दि ॥ व लि ॥ ना ट य व स य ज लि ॥ व लि ॥ या नि मू डा ॥ ०० ति वा व द
ट ॥ ॥

धनमालकाइकायापनिप्रजापथनथलुतिरियागुलिदुलिवलिमल ॥ यदम
छियागिनीवलि ॥ महावलि ॥ चन्दनादिधूपदोपनिप्रवशसाग्धनकाय
वतायहाव ॥ ॥ मालकाजाय ॥ मधुलक्ष्मि ॥ ॐ अस्वस्त्युमधुलाकालनि
ति ॥ रिदवया ॥ अमृकदेवीस ॥ ॥ ॐ नमः ४ यत्रदवताये ॥ दवीसास्व
सुभाजदलनिशवपूषाभाहयनीलिका ॥ कांचीनजात्रहानाभदमृकठलसुत्व
उमालिखनत्रे ॥ सास्वकीमिन्दुवकांसनेरुननमितांकीपमभातिनृणां ॥ वृक्षगम्ये ॥
सुवन्दु ४ सुवगलसुहिने ४ सुसुगतीर्त्तनमामि ॥ चिकामाचयसंपदंविनननसीपु
योगचित्तंदात्रिदंहुवयागुत्रमृकविनासु ॥ हिंकरवाभिक ॥ सुनंददित्रिपूज
हिकयमिरु ॥ नृविधेकाह्या ॥ ॥ नृकनीनयवालेनानकिव ॥ ॥ लंसेपिया

वाहिनी ॥ अमृगहायतकानी ॥ गृहानदिद्यविग्रह ॥ रुकसातावयूजाया ॥ सिद्धिदहि
महेश्वरि ॥ वीरघटयामालकासु ॥ महामाया ॥ धनिमाहनीसाधनपूजकेयाविधि ॥
॥ ॥ धनविहावयाव ॥ देवस्केनसवाससंसावाचकंयुगुवलिविय ॥ ॥ योयसिध ॥
पौरीकाश्यायुह ॥ अंतसिन्दुरपूषातस्ययुजा ॥ कीर्तीकालि २ वरुणविमोहद
लायेनम ॥ कीर्तीवृक्ष ॥ लवो ॥ लवो ॥ येनम ॥ वायवस ॥ २ ले ॥ नानायायनयन
म ॥ दधू ॥ २ उमा ॥ मह ॥ यरायनम ॥ वास ॥ ॐ दवतावसनो ॥ सुवलाकय
साधन ॥ चित्ता ॥ सुदूय ॥ नवकं ॥ सिद्धिदहिनमायुत ॥ ॥ अथयगु ॥ नवर्न ॥
वलिहवनन ॥ कलंवन ॥ पियाववलिसन ॥ ॐ नृज ४ पूसाय ॥ हृद ॥ अवावके

[illegible]

अनस्तां घातया मयध नस्यो धरु वध्व वधः ॥००॥ मला की पत्रि त्यक्त्वा हत्वा द व वपुर्ध
न माद स्व वि द से ४ सा ध्व या व दि द्या च उ द न ॥ ॥ पू नू क्क या नं घा न ने न नि मृ ति वा
ल स र्म न न य र्ण ॥ थ य मू र्ण मं चि वि य म् माल वा क न र क क्क य ॥ ना ट म् व न क्क
म लु ल सा उ ॥ म हा मा या ॥ अ नु र्ग क दि ॥ स म य वा क न क्क य ॥ स क स्य न द व ज्ञा य
॥ ॥ पू नू क्क स य क्क मा ह नी स र्मु ति पू नू क्क या स्य स म य वा क न क्क य ॥ द व न यो ल
स उ न्म दि क्क य ॥ वि पू र या अ र्ध वा ज द क ना ति थ क्क आ ना धी द ॥ वि पू र या स न्द नी स्वा मा ली
नं वि ला य ॥ मा ह नी वि स र्ज थ ७ ॥ थ य द य लि व लि थ या व न ॥ ॥ थं ठि लि या व लि
॥ थ य म न नि ॥ पु नू य ज द कि ल ॥ थ न यार् षं मा स्तु य ह नि न ॥ ल य अ नू क्क म न ॥ पू न स
स्व लि क वा स्य स्व न ॥ स्तु य प्र ह नि न लं न व क्क ना थ स्य ता ता ला न स्व लि क स स्व न ॥

व्रीहः समयतर्पणं कवयित्वा न्यासा मुलवलि विसर्जनं ॥ सुखं साङ्गि धर्मधूनक
 ॥ ॥ पिहावयावदवागीर्षद ॥ ॥ कानं कनि ॥ अम्ब धूवति आत्मानो व्रीहः ॥ स्वान
 काकायाव सकलस्य विय ॥ समयविषयन धिय सकलस्य ॥ मोसा मुल विसर्जनं ॥ सुखं सा
 ङ्गि ॥ पनु मूलकाय ॥ समयसंज्ञया चकाव ॥ पूजा कृद्वाव तस्यैवास्वन रुयकाव कुलिहाव
 य ॥ ॥ आस्वानसलं स्वमलुलया हावधं तसिद्धनस्वानमनने वद्यादिसंखपनपूजा ॥
 ॥ ॥ दवज्ञाय अमुखं राजाय यक ॥ कर्मेतस्योसुलविय सकवर्क आस्वानस ॥ धनं
 लिथवर कुवडावसुलकाय चपनधिस्य ॥ घाघलातालपतिमाय ॥ आस्वन विमदं ता
 ने आस्वानस आस्वनसने तालस्थिघात्रकमतव ॥ पद्ममहं सनाटस्वनस्क आस्वन
 विदनेमालं रुता ॥ ॥ ॥ नित्यनाथ पूजामूल सिद्धि विधि ॥ ॥ अथ दणककाय ॥

पिदहागुलिं तर्पणं स्वतधूनकावदणककायया नी ॥ सुथहा जोनाटस्वनस्क आस्वन रुयक
 यानुजनने ॥ नाटस्वनस्क पूजावन ॥ चन्दनादि मालकावाय ॥ ॐ अयादियजमानस्या मुकमु
 लसीताथ कामनार्थं नृपेय वलिवग कि रदात्रक पूजानि विवर्ध ॥ सां गमगिद वाजने ॥ द
 तसापनुतर्पणं ॥ सकलसे न जाययक ॥ दक्षिण ॥ समय सकलस्य विय पाठविधि ॥ ॥
 आस्वानसमपुलादिपूजने ॥ दवज्ञाय ॥ आ चूसकायवलक्षि आस्वन रुयक ॥ ॥ नित्यदणकका
 यविधि ॥ ॥ अथ देवीकलाय ॥ अथ दतोसकायं रुता ॥ ॥ अथ धूनकविधि ॥ नाट
 स्वनस्कमत आयकी आस्वन रुयक ॥ स्वतसदवेज्ञाययातं सकलसेनका गुरुजानक ॥ धून
 उजानमुक्ति कुपूयउयावदवज्ञाय ॥ कतनस्वतजाय ॥ नाटस्वनस्क दवज्ञाय ॥ कत
 नकावदवज्ञाय ॥ आस्वानवडावदवज्ञायकतदाव आस्वानदवज्ञाय ॥ ॥ अथ नाट
 स्वनस्क लिगविधि ॥ आदित्यवानरुहस्यस्ति वात्रथरु पूजादिनकूकू ॥ आनसतवेतवलि

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

स्नानं॥गंगामयाःसन्निगम्यार्थं नानापापप्रनाशनं॥पूजकस्याप
 यक्त्वा नो स्नानार्थं न प्रदीप्य मां॥चन्दनं॥ॐ दंमलयसंरुर्गं च
 दनं हिमजीतलं॥वीनजाह्नं यच्चिद्रुक् गृहाद्यममसिद्धय॥
 सिद्धनं॥ॐ प्लुवर्द्धनक्षयस्य लोचनं वीनारूपं॥गृहाद्यवीन
 वीनं॥सिद्धनं वर्जदायकं॥ऊं ऊं मका॥ॐ उयवीनमिदं वीनं भ
 नृक्षयस्य लोचनं॥गृहाद्यवीनजागस्य रुलं प्राप्य च यन्मम॥
 पूष्यं॥नानापूष्यसृगन्धानि मालयाः कसुमादयस्तैराभ्यर्च्य

पदं रुद्रं पूष्यानाहर्न मरुमं॥





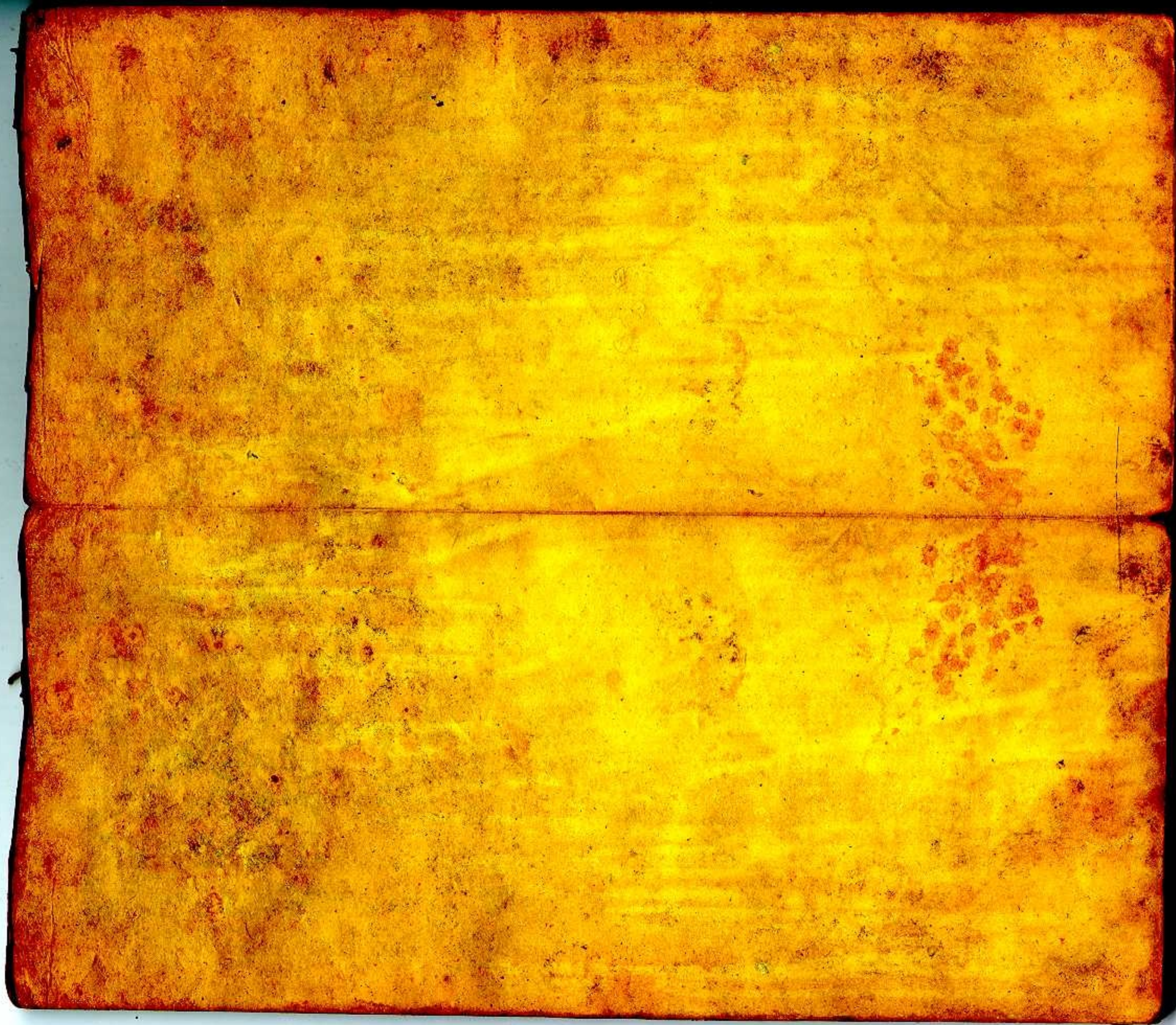


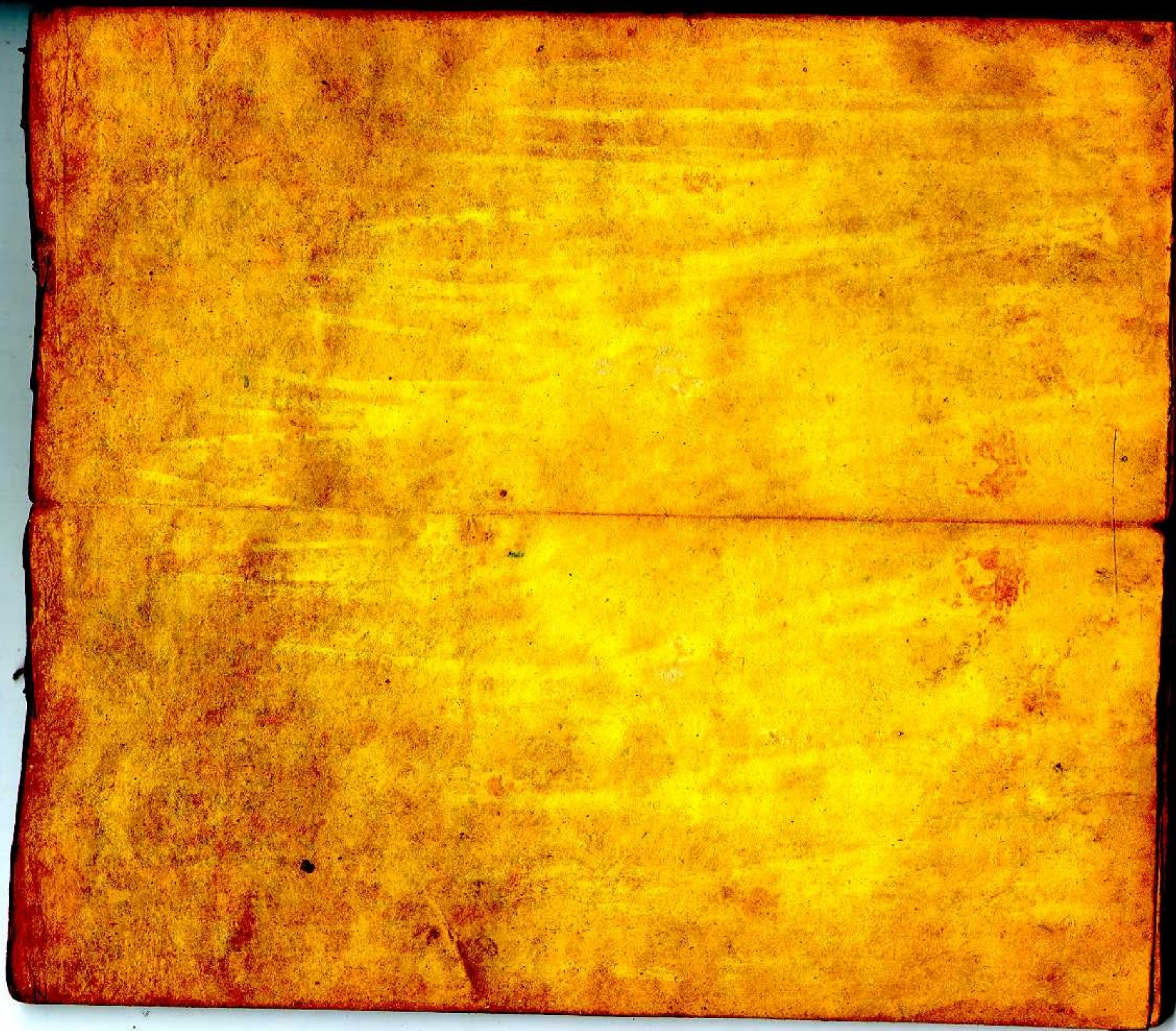


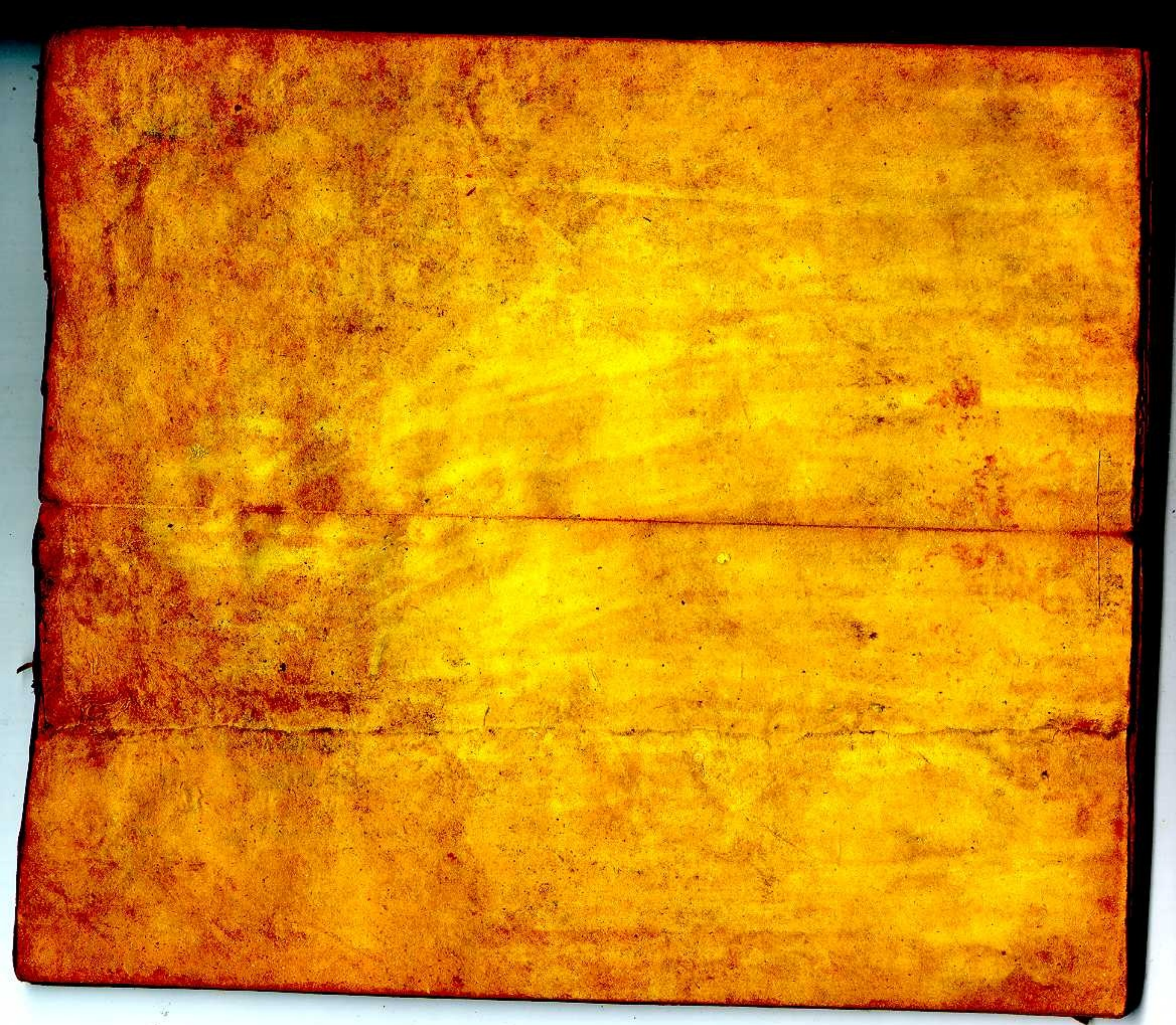


ॐ नमः श्री महाभैरवाय ॥ श्री रत्नवाच ॥ ऊयत्वं मालिनी देवी-
निर्मलमलनाशिनी ॥ हाननकिष्कंधुर्देवी-बुद्धिस्थं न ऊवर्द्धिनी ॥
ऊननी सर्वरुगानां संसात्रस्मिन्मन्त्रवर्तिनी ॥ मागावीनावगी देवी
कान्त्यं कुरु वत्सने ॥ २ ॥ ऊयति पनमतत्वं निर्बलं संतुतं तज्जा
मयी निःसृगा व्यकृतपापना हाननकिस्त्वमिच्छा क्रिया मङ्गला
ऋतुं रवा सुतं रवा घनं सूकता गन्धु वक्रं लला काल नृणां प्रः











ॐ नमः श्रीमहादेव वाय ॥ ॥ श्रीरैववावाच ॥ जय त्वं मालिनी देवी निर्मल
 मलनाशिनी ॥ ह्रीं नमः किष्कुरु देवी वृद्धिस्तु न ऊवर्द्धिनी ॥ १ ॥ जननी सर्वः
 रूपा नी सैसा भस्मिन्व वस्तिना ॥ मागावी नावनी देवी कार्त्तिके नृव
 त्सव ॥ २ ॥ जय निम्नमन त्वनिर्घोष संतु गत आमयी निःसृगा चक
 रूपापना ह्रीं नमः किष्कुरु मिच्छा क्रियामङ्गला ॥ मरुतं खासुत खासुत न
 सफना रणदुवत्किष्कुला काल रूपा प्रभुर्नोद ह्यकिष्कु सैगी यस्त ॥ रास

नाश्रानि रूपास्वरूपाणि वाञ्छानामाचनो दीमना कोविका ॥ विन्दु रूपा
 वधू गार्ध्व चैडा कृतिस्त्वृगि काक्ष भ्रुम कान उँ कान न्रुँ कान सैयु अ न न
 त्वमापद्य न ॥ नत्वरूपा रूपा कान वस्त्रा यदी भ्रुदि न ४ आन नत्वा ह वाः
 आनि रूपा च श्री कृष्ण सैमाहिनी ॥ नृद मागा गथ नन्द ह्यकि ४ सैसु श्रुगि
 सूर्य मना धीष्नी ॥ तान रूपा निधीष्म सिकास्त नृरूपा ह नाख्या च ४
 ण रौ की ण सद्यात्मिका ॥ नृग्रही चक्र नाधिना त्वं महासैन सैरागिनी धा
 द ह्यका मृगा विन्दु सैदाह नी ॥ सन्दद ह प्रगा ण सैम्य कृपना म्भ नन्द नि

द्यौः सौख्यप्रदः ॥ तेन वीर्येन वायानकी जनकः ॥ यत्र मालिनी नृदमाः
 लार्चिनं नृदमाकि ॥ स्वगी सिद्धिदा गन्धनी सिद्धिमाता विदुः ॥ वृत्राणां मि
 थान्या र्क्षणी ॥ वाग्बिभुद्रा ॥ सिद्धिवागी ॥ मारुकासित्वमिच्छा क्रिया
 मंगला सिद्धिलब्धिः ॥ विदुः निसिं हनि ॥ सूरु निर्जनि ॥ साधनी स्वातिर्ना
 यणी ॥ नक्तचन्द्रा कला भवना ॥ सीमरूपामहाकुम्भायागप्रिया त्वेज
 र्ग्याङ्किता ॥ नृदसीमाहनी त्वेन वात्मानन्दद्वयं चात्संगयानासुताम
 कुमाङ्गनिर्गम्यो लिति मारुतिर्दीनपाना नृकैः ॥ सूरु केशी ॥ सूरु सः ॥

वीर्यप्रभुर्गोर्दिव्यायानात्सर्वे ॥ मूल्यकैकालकापालिनी ॥ प्रकज्जनाद्विज्जनादि
 जन्मचतुष्टयं च वदन्तु जन्माहर्वैः ॥ ४० ॥ नृवैर्लेखनात् ॥ ४१ ॥ रूलातिस्त्रयसं
 मयमी सप्रिया गविद्या दुता ॥ हासिर्निर्मल्युककालकापालिकैः ॥ दिव्यचयान्
 नृदमनुत्तमस्तान् उक्तान् ॥ स्त्राहास्वधाकान् वीर्यवद्वयत्कान् नृदकान् रुद्रकान्
 जातिनिर्गम्य मनुजानां चानिर्गम्य महस्त्रिभुवनं ॥ ४२ ॥ सुगवली जायि
 ति ॥ साधकैः ॥ पूरुके मारुतिर्मूल्युलदीकुर्ग्यागिनिर्गमिनी ॥ हृन्दमलाप
 कैः नृदकी जनसेयस्य ॥ यागिनी यागसिद्धिप्रदा ॥ दवित्वेपदपशपमैर्लार्चि

नैऋतं ह प्रोक्तं सुसंयुक्तं स। गत्यदिवा कृती ऊहिता। सकृपा गालसंयचनी सिद्धि नवा
 हना वरुणं तत्किं नायव्य २० दत्तुं कै। प्रक कालै द्विकालै त्रिकालै चतुर्विंशत्युक्ता
 चाष्टौ शुचि ४ संस्मरेत्तस्मादामानव ४ संस्मरेत्तस्मादामानव ४ संस्मरेत्तस्मादामानव ४ संस्मरेत्तस्मादामानव ४
 न ऊसा। दविष्णु गननागमसमहालक्ष्मी प्रदा। ह मयी नान्यदा नान्यदा नान्यदा नान्यदा नान्यदा नान्यदा
 पुण्यममहादाय दद्यादविमर्शानि संस्मृत्य देवी त्वदीयं मूलं पूर्णं च त्वा नृका
 नैस्सु नर्दिश्यामालिखे सत्कृत्तुला त्वं दृष्टुं शुक्लं लै॥ यपिव द्वा दृष्टुं दृष्टुं नैना
 गया शोभुजा वध्या पादांगलैः संपित्तं नाम सै कीर्तना दविमर्शानि द्या नैऋ
 महाचा धिति ४॥ संस्मृत्य पादानविन्द दद्यात्तं महा कालिकालाग्नि न ऊष्य

॥ स्कन्द उवाच ॥ विन्दुवर्धन उवाच ॥ चार्क पृष्ठा पृथ्वीर्मा लिमालालि संयुक्ते
 ऊर्ध्व सत्पिङ्गवा ॥ सर्वे वी नाम्नि कते न वी ते न वस्मन् न नाना गमा है ऊमः
 स्वापनार्धं ऊम स्वापनार्धं मिध ॥ प्रवेत्तु त्वा महा देवी ते न व न महात्म
 ना ॥ गमालिङ्गं विनिर्घ्रिय निर्जना पन मञ्जरी ॥ यद ऊन य निगुह मा
 गही नै च य ह व ॥ ऊतुमर्ह सि भद विकस्य वे निष्पन्न मनः ॥ ॥ ॥
 ति। शिव उवाच ॥ समन त्वे मालिनी दत्तु क ४ सुपुष्पम् ॥ ॥ शिवि नै चै ना
 गृह निवासि त शील लक्ष्मी वल्लभ न ॥ ॥

॥ अथ धर्मादि विधिः ॥ ॥ नवात्मामनुष्ठाप्य पापका ॥ ॐ नमो भगवते ॥
कवचनावगुणनी ॥ धनमूला ॥ गिरिवन ॥ धर्म ॥ मूलनद ॥ धाप्रजय ॥
चन्दनादिपूजन ॥ अर्धनादि ॥ मूलनग ॥ शलि ॥ ३ ॥ द्वादशादि ॥ ७ ॥
वलि ॥ ॐ नमो भगवते ॥ देवलिङ्ग ॥ २ ॥ स्वाहा ॥ धूपदीप ॥ ऊप ॥ सा
ॐ ॥ ॥ इति वाक् ॥ ७ ॥ आदि ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ० ॥ महाद्वार ॥ वाह्यमण्डल
॥ ७ ॥ अथ ॥ ७ ॥ अतिगदवागं ॥ कर्पासगं ॥ सुसंरुवं ॥ १ ॥ नक्तक ॥ बृहन्नि
त्योर्न ॥ पट्ट ॥ मल्लविचित्रिनी ॥ ॥ धोकिनी ॥ देवदेवि ॥ ॥ प्रकचिरुप्रधो ॥ कि

ता ॥ २ ॥ गुरुलनगुआरुआ ॥ अथ गगनापि स ॥ १ ॥ गगनगुमहा
॥ ७ ॥ वस्तुकोषयसंयुत ॥ ३ ॥ सर्वपापघ्नि ॥ निर्मुक्त ॥ सर्वका
मरुलप्रद ॥ पूष्योपधन ॥ धन्य ॥ लक्ष्मी ॥ अथिप्रवर्द्धन ॥ ४ ॥
आवहवैश्वस्तुगनु ॥ सावद्वर्षसहस्रक ॥ आदयात्सर्वदव
णि ॥ सुनलीक ॥ ४ ॥ समन्विता ॥ ५ ॥ प्रकद्विचित्र ॥ ४ ॥ पट्ट ॥ प्रलम्ब
गुर्वदद ॥ ॥ अजमानानदया ॥ अदिचर्च ॥ निवर्धक ॥
ॐ मां दानप्रदादनप्रमिसीना ॥ मूलमनु ॥ समर्पयामि ॥

॥ अथ लाननयवाङ्म ॥ विगनसितपद्मार्मसध्वयंकउरविर्ण ॥ वि
चित्रमकवर्णवानववमुपल्लित ॥ किङ्किरीवकापर्णकन्दर्क
ल्लयल्लित ॥ कुङ्किरीकापत्रियादद्यात्पूततावापिकल्पयत् ॥
॥ इदवत्सर्वलोकषूयुगकाटिसमादत्ते ॥ अमुकगवृत्ति ॥ ॥



